

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 23, साहित्यिक ओटी/एनटी

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

जो चीजें आप कर सकते हैं, आप तब तक व्याख्या की प्रक्रिया में आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं हैं जब तक कि आप यह नहीं बता सकें कि आपका अनुच्छेद अपने संदर्भ में क्या कर रहा है, यह जो पहले आता है उससे कैसे विकसित होता है और जो पहले आता है उससे कैसे संबंधित होता है और यह कैसे तैयारी करता है इसके बाद क्या आता है. और यह विचार और तर्क के प्रवाह में क्या योगदान देता है, अगर यह नहीं होता तो क्या कमी होती। और हमने निर्गमन के अध्याय 18 को देखा और यह देखते हुए समाप्त किया कि अध्याय 18 में, मूसा को न्यायाधीशों की नियुक्ति करने का यह वृत्तांत था और चूँकि मूसा ने इस्राएल के न्यायाधीश के रूप में कार्य किया था और उसके ससुर जेथ्रो को उसे यह बताना था कि इससे वह थक गया था, वह इन सभी मामलों को संभाल नहीं सका।

उस कहानी को एक अन्य कहानी, अमालेकियों की लड़ाई, के साथ जोड़ा गया था, जहां एक बार फिर मूसा को कमजोर और मानवीय आयामों और मानवीय संदर्भों में चित्रित किया गया है और हमने सवाल पूछा, मूसा को एक कमजोर इंसान के रूप में क्यों चित्रित किया गया है जो कुछ नहीं कर सकता यह और कौन चीजों को संभाल नहीं सकता? जबकि जब आप व्यापक संदर्भ को देखते हैं, तो सबसे पहले जब परमेश्वर ने लोगों को निर्गमन के माध्यम से मिस्र से बाहर निकाला था और यहां तक कि अध्याय 20 में भी, कुछ अध्यायों के बाद जहां मूसा वह है जो सिनाई पर्वत पर चढ़ता है, कानून प्राप्त करता है, वापस आकर लोगों को दे देता है। प्रश्न यह है कि लेखक ने मूसा को उस स्थिति के बीच में क्यों चित्रित किया है जहाँ उसे लगभग एक महानायक के रूप में चित्रित किया गया है? अब उन्हें एक कमजोर व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो इज़राइल में सभी मामलों को संभालने की कोशिश में थक जाता है। वह भी थक जाता है, अमालेकियों के विरुद्ध युद्ध में अपने हाथ खड़े नहीं रख पाता।

और विचार करने योग्य अगली विशेषता यह है कि, जब आप अध्याय 17 में अमालेकियों की लड़ाई से भी पीछे हटते हैं, श्लोक 8 से शुरू करते हुए, जब आप अध्याय 17 के पहले सात

श्लोकों को देखते हैं, तो हमें मूसा द्वारा पानी उपलब्ध कराने की यह कहानी मिलती है। इस्राएलियों के लिए चट्टान और हमें एक ऐसा दृश्य भी मिलता है जो इस्राएलियों के निर्गमन में दोहराया जाता है क्योंकि वे अपने कथित दुर्भाग्य के कारण बड़बड़ाते और शिकायत करते हैं क्योंकि वे रेगिस्तान के पार वादा किए गए देश की यात्रा कर रहे हैं और वे शिकायत करते हैं और चाहते हैं कि वे वापस जा सकें। मिस्र को। दिलचस्प बात यह है, और मुझे लगता है कि इसे समझने की कुंजी श्लोक 7 है, जो चट्टान से पानी निकलने और इस्राएलियों के बड़बड़ाने की कहानी का बिल्कुल अंत है। पद 7 कहता है, और उस ने मूसा की ओर संकेत करते हुए उस स्थान का नाम मासा और मरीबा रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने झगड़ा किया, और यह कहकर यहोवा की परीक्षा की, कि क्या यहोवा हमारे बीच में है वा नहीं? अब यह दिलचस्प है कि कथा उस प्रश्न का उत्तर नहीं देती है।

यह एक तरह से आपको लटका कर रख देता है। अच्छा, उन्होंने क्या सोचा? क्या प्रभु उनके साथ थे या नहीं? क्या भगवान ने उस प्रश्न का उत्तर दिया? मेरी राय में, ये अगली दो कहानियाँ, अमालेकियों की कहानी और वह पाठ जिस पर हम विचार कर रहे हैं, अध्याय 18 और मूसा की इज़राइल में सभी मामलों को संभालने में सक्षम नहीं होने की कहानी, उस प्रश्न का उत्तर नहीं है। आप देखिए, मूसा को एक कमजोर इंसान के रूप में चित्रित करके जो चीजों को संभाल नहीं सकता, ऐसा लगता है जैसे लेखक यह चित्रित करने की कोशिश कर रहा है कि भगवान को अपने लोगों के साथ होना चाहिए क्योंकि यह मूसा नहीं है।

मूसा एक कमजोर इंसान है. ये सभी चीजें जो घटित हुई हैं उनका श्रेय ईश्वर को दिया जाना चाहिए। परमेश्वर को अपने लोगों के बीच में होना चाहिए क्योंकि मूसा निश्चित रूप से ऐसा नहीं कर सकता।

इसलिए, अध्याय 18 को लेकर और इसे इसके संदर्भ में रखते हुए, यह अधिकार सौंपने और व्यवसाय कैसे चलाया जाए, इसके बारे में कहानी नहीं है। यह मुख्य रूप से इज़राइल की अदालत प्रणाली की उत्पत्ति के बारे में भी नहीं है, लेकिन व्यापक संदर्भ में, यह मूसा को एक कमजोर क्षण में एक कमजोर इंसान के रूप में चित्रित करने की इस धारणा का हिस्सा प्रतीत

होता है जो यह सब नहीं कर सकता है। कथा में उस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, क्या भगवान हमारे साथ हैं या नहीं? क्या भगवान सचमुच हमारे बीच हैं? ईश्वर को लोगों के बीच होना चाहिए क्योंकि वह मूसा नहीं हो सकता।

वह सिर्फ एक कमजोर इंसान है। एक अन्य उदाहरण जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, लेकिन यह पुराने नियम में एक और बहुत ही संक्षिप्त उदाहरण है कि किसी पाठ का संदर्भ या तर्क कैसे काम करता है। हम पहले ही भजन अध्याय 15 को देख चुके हैं, जो एक प्रसिद्ध प्रवेश भजन है, और यह काफी सीधा है, लेकिन फिर भी एक अच्छा उदाहरण है।

इसकी शुरुआत एक सवाल उठाने से होती है। हे प्रभु, तेरे पवित्रस्थान में कौन वास कर सकता है? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन रह सकता है? और फिर मूलतः शेष भजन उस प्रश्न का उत्तर देता है। हम आयत 2 से शुरू कर रहे हैं। वह जिसकी चाल निर्दोष है, और जो सही काम करता है, जो अपने दिल से सच बोलता है, और उसकी जीभ पर निंदा नहीं करता है, और अपने पड़ोसी पर कोई बुराई नहीं करता है, और उस पर कोई कलंक नहीं लगाता है जो दुष्ट मनुष्य का तिरस्कार करता हो, और यहोवा के डरवैयों का आदर करता हो, जो दुख होने पर भी अपनी शपथ खाता हो, जो बिना ब्याज के अपना रूपया उधार देता हो, और निर्दोष के विरुद्ध दुल्हन स्वीकार नहीं करता हो।

जो ये काम करता है, वह कभी न डगमगाएगा। अब इस पाठ में ऐसी कई चीजें हैं जिनकी हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में भी जांच कर सकते हैं। बिना सूदखोरी के पैसा उधार देने का क्या मतलब है? वगैरह।

आदि। कुछ अन्य विवरण हैं, लेकिन संदर्भ में कुल मिलाकर, यह एक प्रश्न-उत्तर प्रारूप का अनुसरण करता है। पद 1 में प्रश्न, आपके पवित्रस्थान में कौन निवास कर सकता है? पवित्र पहाड़ी पर चढ़ो.

शेष भजन उस प्रश्न का उत्तर देता है। नए नियम के मुट्ठी भर उदाहरणों की ओर बढ़ते हैं, जहां साहित्यिक संदर्भ महत्वपूर्ण है और आपके पाठ पढ़ने के तरीके में अंतर लाता है। यह पाठ को एक साथ रखने और यह समझने की आपकी क्षमता है कि विभिन्न भाग एक-दूसरे के संबंध में कैसे कार्य कर रहे हैं।

और वैसे, यह महत्वपूर्ण है जब हम संदर्भ का प्रश्न पूछते हैं, न कि केवल कहने के लिए, और मैंने इसे अकादमिक और लोकप्रिय साहित्य दोनों में पढ़ा है, कोई कहेगा कि संदर्भ यह सुझाव देता है, या संदर्भ के कारण इसका यह अर्थ है। खैर, यह पर्याप्त नहीं है। किसी को यह पूछने की जरूरत है कि संदर्भ में क्या है।

केवल यह न कहें कि संदर्भ यह कहता है, या संदर्भ इसकी मांग करता है। मुझे इस संदर्भ में दिखाएँ कि ऐसा क्या है जिसकी आवश्यकता है या सुझाव देता है कि आपने इसे सटीक या सही तरीके से पढ़ा है। तो नए नियम पर आगे बढ़ने के लिए, एक उदाहरण जिसका मैं उपयोग करना चाहूंगा वह गॉस्पेल में पाया जाता है।

मैं आपको गॉस्पेल से कथा का एक उदाहरण दूंगा, पॉल के पत्रों से कुछ, और रहस्योद्घाटन से भी एक। फिर से, यह दिखाने के लिए कि संदर्भ कैसे काम कर सकता है। मैथ्यू अध्याय 4 में, पुस्तक की शुरुआत के बिल्कुल अंत में, यदि आप साहित्यिक प्रवाह और संदर्भ का अनुसरण करते हैं, तो यह ठीक इसके बाद आता है, अध्याय 2 में, हम यीशु के प्रारंभिक जीवन के वृत्तांतों के बारे में पढ़ते हैं, लेकिन लेखक तुरंत यीशु के वयस्क मंत्रालय पर चला जाता है, इसलिए एक अंतराल है।

और आपको याद है कि आख्यान में कोई दिलचस्पी नहीं है, कम से कम गॉस्पेल में पहली शताब्दी की आख्यान हमें ईसा मसीह के जीवन का विस्तृत विवरण देने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। लेकिन अध्याय 3 में, यह सीधे यीशु के वयस्क मंत्रालय की ओर चला जाता है और अध्याय 4 के साथ, जैसे ही वह अपने मंत्रालय की शुरुआत करता है, अध्याय 4 में हमें यह दिलचस्प सारांश कथन ठीक अध्याय के अंत में मिलता है। और शुरुआत करते हुए, मैं श्लोक 23 से शुरू करूंगा,

और यह मैथ्यू अध्याय 4 और श्लोक 23 है, जिस पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं वह वाक्यांश है, यीशु राज्य का प्रचार करते हुए और भगवान के राज्य को सिखाते हुए और सभी बीमारियों को ठीक करते हुए आए।

ऐसा लगता है कि यह सारांश आपको अगले कई अध्यायों के लिए तैयार कर रहा है, क्योंकि अध्याय 5 से 7 में, हमें एक रिकॉर्ड मिलता है, यीशु की शिक्षाओं का एक विवरण जिसे हम जानते हैं कि यह एक पहाड़ी उपदेश है, और उसके बाद, वह 5 से 7 है, इसके बाद अध्याय 8 और 9 में, हमें एक वृत्तांत मिलता है, हम इस बारे में पोप फॉर्म आलोचना के साथ पहले ही बात कर चुके हैं, अध्याय 8 और 9 में, हमें उपचार कहानियों, या चमत्कारिक कहानियों का एक संग्रह मिलता है, जहां यीशु विभिन्न बीमारियों को ठीक करते हैं। यहाँ तक कि वह प्रकृति को भी ठीक करता है, लेकिन हमें कहानियों का एक संग्रह मिलता है जहाँ यीशु विभिन्न व्यक्तियों को उनकी बीमारियों से ठीक करता है। तो फिर जो चल रहा है, मुझे लगता है, वह अध्याय का श्लोक 23 और 24 है, विशेष रूप से अध्याय 4 का श्लोक 23, एक तरह से सारांश कथन है।

यीशु परमेश्वर के राज्य के बारे में शिक्षा देते हैं और उपदेश देते हैं, और वह बीमारियों और बीमारियों को भी ठीक करते हैं, और फिर अध्याय 5 से 9 उन दो घटनाओं का विस्तृत विवरण देते हैं, परमेश्वर के राज्य का उपदेश और रोगों का उपचार। तो अध्याय 5 से 7 तक यीशु के पहाड़ी उपदेश में परमेश्वर के राज्य के बारे में शिक्षा देने और उपदेश देने का विवरण है, फिर अध्याय 8 और 9 लोगों के बीच यीशु के रोग और बीमारी को ठीक करने का विवरण है। फिर, दिलचस्प ढंग से, अध्याय 9 के बिल्कुल अंत में, मैथ्यू के अध्याय 9 और श्लोक 35 में, ध्यान दें कि वह एक बार फिर कैसे सारांशित करता है, वह कहता है, श्लोक 35, यीशु सभी शहरों और गांवों से गुजरे, उनके आराधनालयों में शिक्षा दी, प्रचार किया राज्य का शुभ समाचार, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करना।

तो एक बार फिर, उन दो वाक्यांशों, 4.23 और 9.35 में, आपके पास एक सारांश है, यीशु परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते हैं और हर बीमारी को ठीक करते हैं। बीच में, आपके पास पहाड़ी उपदेश में यीशु द्वारा परमेश्वर के राज्य के बारे में शिक्षा देने और उपदेश देने और अध्याय 8 और

9 में यीशु द्वारा विभिन्न बीमारियों और बीमारियों को ठीक करने के लंबे विवरण हैं। इसलिए मैथ्यू ने मैथ्यू के इस खंड और बाकी को सावधानीपूर्वक व्यवस्थित किया है मैथ्यू का भी, लेकिन सिर्फ एक उदाहरण देने के लिए, मैथ्यू ने इस खंड को सारांश और विस्तार के साथ सावधानीपूर्वक व्यवस्थित किया है, दो विचारों का सारांश, राज्य का उपदेश, उपचार, उन दोनों का विस्तार, और फिर उस तरह का एक और सारांश अध्याय 5 और 7 में उन दो बड़े खंडों के बीच एक ब्रैकेट के रूप में कार्य करता है, पर्वत पर उपदेश, और अध्याय 8 और 9 बीमारियों और बीमारी से पीड़ित विभिन्न व्यक्तियों का उपचार। पत्र-पत्रिका साहित्य के कुछ उदाहरण देने के लिए, विशेष रूप से पॉल के पत्रों में, गलातियों अध्याय 1 और 2। गलातियों अध्याय 1 और 2 में, पॉल एक तर्क शुरू कर रहा है कि, यह प्रदर्शित करने के लिए कि उसका सुसमाचार और उसकी प्रेरिताई, हम पहले ही संक्षेप में देख चुके हैं अध्याय 1, 1 से 5 में, कैसे पॉल उन प्रमुख विचारों को इंगित करने के लिए एक विशिष्ट पत्र-संबंधी अभिवादन और परिचय का विस्तार करता है जो उसका ध्यान आकर्षित करने वाले हैं और पाठकों को जीतने और उन्हें इस बात के लिए तैयार करने के लिए कि वह क्या कहने जा रहा है।

लेकिन पॉल अध्याय 1 से 2 में जो कुछ करता है उनमें से एक में उसके रूपांतरण अनुभव के आसपास की कुछ चीजों का एक लंबा वर्णनात्मक विवरण शामिल है। तो वह, अध्याय 1 में, विशेष रूप से श्लोक 13 से शुरू करते हुए, वह शुरू करता है, आपने यहूदी धर्म में मेरे जीवन के पिछले तरीके के बारे में सुना है, मैंने कितनी तीव्रता से भगवान के चर्च को सताया और इसे नष्ट करने की कोशिश की। मैं यहूदी धर्म में अपनी उम्र के कई यहूदियों से आगे बढ़ रहा था।

और वह आगे बढ़ता है और यहूदी धर्म में अपने जीवन के आसपास की अन्य घटनाओं का वर्णन करता है, बल्कि अपने रूपांतरण का भी वर्णन करता है, और फिर यरूशलेम में पीटर और जेम्स और जॉन जैसे कुछ प्रेरितों के साथ उसकी बातचीत, उसके रूपांतरण के बाद और वह कैसे बातचीत करता है और एक जोड़े को बनाता है। यरूशलेम की यात्राएँ और अन्य प्रेरितों के साथ बातचीत। और सवाल यह है कि गलातियों अध्याय 1 और 2 में इस वर्णन या इस कथा खंड का उद्देश्य और इरादा क्या है? और फिर, हमें श्लोक 2 के अध्याय विभाजन को नजरअंदाज करने की जरूरत है क्योंकि यह उसी की निरंतरता है जिसके लिए वह अध्याय 1 में तर्क दे रहा है।

लेकिन फिर, मुझे लगता है कि कुंजी यह है कि अध्याय 1, 11 और 12 में, हम पॉल की तरह पाते हैं थीसिस कथन या वह अध्याय 1 और 2 में जो बहस करने जा रहा है उसका सारांश कथन। और वह श्लोक 11 में कहता है, मैं चाहता हूं कि आप यह जान लें, भाइयों, कि मैंने जो सुसमाचार प्रचार किया वह मनुष्य द्वारा बनाई गई कोई चीज़ नहीं है। मैंने इसे किसी मनुष्य या मनुष्य से प्राप्त नहीं किया, न ही मुझे यह सिखाया गया।

बल्कि, मैंने इसे यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन द्वारा प्राप्त किया। यही थीसिस या मुख्य बिंदु है जिस पर पॉल बहस करने जा रहा है। और शायद यह उन क्षेत्रों में से एक हो सकता है जिन पर झूठे शिक्षक, तथाकथित यहूदीवादी, पॉल गैलाटियन्स में प्रतिक्रिया दे रहे हैं, यह कुछ ऐसा हो सकता है जिस पर वे सवाल उठा रहे थे, कि पॉल वास्तव में एक वास्तविक प्रेरित नहीं है।

वह पूरी तरह से इंसानों और इंसानों की शिक्षा पर निर्भर है और उसने अपना सुसमाचार निकाला है, जिसे वे नाजायज मानते हैं। और वह सुसमाचार यह है कि गैर-यहूदी लोग परमेश्वर के लोग बन सकते हैं और मोज़ेक कानून के अधीन होने के अलावा, केवल यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा, विश्वास के द्वारा उचित ठहराए जा सकते हैं। और कुछ लोग कहेंगे, ठीक है, सुसमाचार पॉल द्वारा गढ़ा गया है।

यह मनुष्यों द्वारा सिखाया गया था। और पॉल, उसकी प्रेरिताई वैध नहीं है। तो अब पॉल 11 और 12 में अपनी थीसिस पर जोर देता है, मैं चाहता हूं कि आप जानें, मेरा सुसमाचार किसी इंसान से नहीं आता है।

मुझे यह किसी इंसान द्वारा नहीं सिखाया गया था, बल्कि यह पूरी तरह से यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन के परिणामस्वरूप आया था। अब, मुझे लगता है कि शेष अध्याय 1 और 2 विकसित होने जा रहे हैं और उसके लिए बहस की जा रही है। और इसलिए जब पॉल यहूदी धर्म के तहत अपने जीवन की व्याख्या करना शुरू करता है, जब वह यहूदी धर्म में अपने जीवन के बारे में कहता है, मैंने भगवान के चर्च पर अत्याचार किया, तो मैं यहूदी धर्म और कानून का पालन करने में अपने सभी समकालीनों से आगे बढ़ रहा था।

मैं कानून के प्रति उत्साही था. वह फिर से प्रदर्शित कर रहा है कि उसके पिछले जीवन में किसी भी चीज ने उसे सुसमाचार के लिए तैयार नहीं किया। इसलिए वह अपने सभी आधारों को कवर करने की कोशिश कर रहा है।

वह कैसे कह सकता है, या कम से कम यहूदी धर्म के तहत उसके पिछले जीवन ने, उसे सुसमाचार के लिए तैयार नहीं किया? क्योंकि वास्तव में, यह बिल्कुल विपरीत था। वह यीशु मसीह के चर्च पर अत्याचार कर रहा था और उसे नष्ट करने की कोशिश कर रहा था। वह यहूदी धर्म में आगे बढ़ रहे थे।

इसलिए उसके पिछले जीवन में किसी भी चीज़ ने उसे यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए तैयार नहीं किया, और उसके रूपांतरण के दौरान या उसके बाद किसी भी चीज़ ने उसे तैयार नहीं किया। उनका रूपांतरण पूरी तरह से एक परिणाम था, मनुष्यों द्वारा प्रतिबिंब या सिखाए जाने का नहीं, बल्कि यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन का। और फिर उनके रूपांतरण के बाद का उनका जीवन, वह स्पष्ट करते हैं, मैंने कभी भी किसी भी प्रेरित से तुरंत सलाह नहीं ली।

और जब मैंने प्रेरितों से परामर्श किया, तो सबसे पहले, उन्होंने कभी भी मेरे सुसमाचार में कुछ भी नहीं जोड़ा, लेकिन दूसरे, उन्होंने वास्तव में मुझे संगति का दाहिना हाथ दिया। उन्होंने मेरे सुसमाचार की वैधता को स्वीकार किया। तो फिर, पॉल है, एक यहूदी के रूप में पॉल के जीवन की यह पूरी कहानी, और उसके रूपांतरण पर क्या हुआ, और यरूशलेम की ये यात्राएँ जहाँ वह अंततः प्रेरितों के साथ बातचीत करता है, ये सभी छंद 11 और 12 में उसकी थीसिस पर बहस करने के लिए हैं।, कि यह सुसमाचार मुझे किसी मनुष्य से नहीं मिला।

मेरे रूपांतरण से पहले, उसके दौरान, या मेरे रूपांतरण के बाद कुछ भी उस पर सवाल नहीं उठाता। लेकिन इसके बजाय जो कुछ भी हुआ वह दर्शाता है कि मेरा सुसमाचार यीशु मसीह के प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन के अलावा किसी अन्य तरीके से नहीं आ सकता था। तो फिर, संदर्भ की समझ हमें इस कथा में से कुछ को समझने में मदद करती है।

पॉल यहूदी धर्म में अपने पूर्व जीवन के बारे में क्यों बात करता है? वह यरूशलेम की कुछ यात्राओं की चर्चा क्यों करता है? वह प्रेरितों के साथ अपनी बातचीत की चर्चा क्यों करता है? उसके पास समय का ऐसा उल्लेख क्यों है जहां वह कहता है, फिर तीन साल बाद मैंने यह किया, और फिर अध्याय 2, श्लोक 1, 14 साल बाद, फिर से, क्योंकि वह उस बिंदु पर बहस करने की कोशिश कर रहा है, कि मेरा सुसमाचार नहीं आया यह मनुष्यों द्वारा नहीं सिखाया गया था, यह मेरे द्वारा नहीं गढ़ा गया था, बल्कि यह केवल यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन से आया था। एक और उदाहरण, 1 कुरिन्थियों 13 में, और मैं इसे नहीं पढ़ूंगा, लेकिन यह, फिर से, यह है, मुझे लगता है, काफी सीधा है, लेकिन थोड़ा और विस्तार से देखने के लिए कुछ चीजें हैं, यह है अध्याय 13 प्रसिद्ध प्रेम प्रसंग है। और वास्तव में, इसमें एक काव्यात्मक गुण है जो शायद इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की अनुमति देता है, जिसमें यह लगभग प्रेम पर एक मिश्रण है, या यह प्रेम, प्रेम के गुण की प्रशंसा करता है, यह परिभाषित नहीं करता है कि यह क्या है, बल्कि इसकी विशेषता का वर्णन करता है। विशेषताएँ, और हम अक्सर इसका उपयोग विभिन्न संदर्भों में करते हैं।

सबसे आम बात यह है कि इसे किसी शादी में पढ़ा जाता है क्योंकि यह उस तरह का प्यार है जो एक पति और पत्नी को एक-दूसरे के प्रति दिखाना चाहिए। और मैं निश्चित रूप से यह नहीं कहना चाहता कि यह अमान्य है। मैंने और मेरी पत्नी ने यह पाठ हमारी शादी में भी पढ़ा था।

लेकिन फिर से, हमें यह समझने की जरूरत है, और जब आप अध्याय 13 पढ़ते हैं तो जो स्पष्ट हो जाता है, यदि आप अपनी दृष्टि को व्यापक और विस्तृत करते हैं, तो क्या यह एक तर्क या एक संदर्भ के भीतर आता है जहां पॉल कोरिंथियन चर्च में एक समस्या से निपट रहे हैं कि वे कैसे 'हमने आध्यात्मिक उपहारों का इलाज किया है। तो अध्याय 12 और श्लोक 1 शुरू होता है, अब आध्यात्मिक उपहारों के संबंध में, जो, फिर से, 1 कुरिन्थियों के संदर्भ को अधिक व्यापक रूप से देखने के लिए, यह अक्सर एक तरीका है जहां पॉल कोरिंथियन चर्च में विभिन्न विषयों या विभिन्न समस्याओं और मुद्दों पर संकेत देता है जिसे वह लेता है ऊपर। मुझे लगता है कि हमने पिछले सत्र में कहा था कि पॉल 1 कोरिंथियन में समस्याओं का जवाब दे रहा है, और कोरिंथियन चर्च की

स्थापना के बाद, उसे समस्याओं की एक श्रृंखला से अवगत कराया गया है जो मौखिक रूप से उत्पन्न हुई हैं, किसी ने मौखिक रूप से इनमें से कुछ समस्याओं के बारे में उन्हें पत्र द्वारा भी बताया।

कोरिंथियंस ने, जाहिरा तौर पर, सेंट पॉल में एक पत्र लिखा है, जिसमें उन्हें इनमें से कुछ समस्याओं से अवगत कराया गया है। तो 1 कुरिन्थियों में पॉल जो करता है वह इन समस्याओं को लेना और उनसे निपटना है। और जिन तरीकों से वह आम तौर पर किसी नए विषय या समस्या में बदलाव का संकेत देता है उनमें से एक इस वाक्यांश के माध्यम से होता है, अब संबंधित, या अब आध्यात्मिक उपहारों के बारे में।

इसलिए अध्याय 12 हमें इस समस्या से निपटने के लिए पॉल के इरादे से परिचित कराता है या इंगित करता है, प्रसारित करता है कि कुरिन्थवासी आध्यात्मिक उपहारों के साथ कैसा व्यवहार कर रहे थे। बहुत ही कम विस्तार में जाने के लिए, जब आप अध्याय 12 पढ़ते हैं, तो यह प्रकट होता है, और जब आप कुरिन्थियों की पृष्ठभूमि को देखते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि वे जो काम कर रहे थे उनमें से एक यह था कि वे कुछ उपहारों पर जोर दे रहे थे, कम से कम कुछ कोरिंथियन मण्डली के लोग आध्यात्मिक रूप से अपनी स्थिति के संकेत के रूप में आध्यात्मिक उपहारों पर जोर दे रहे थे। लेकिन मैं राजनीतिक और आर्थिक, या सामाजिक रूप से यह भी सुझाव दूंगा कि कुछ विशेष गुणों को प्रकट करने की उनकी क्षमता, विशेष रूप से अन्य भाषाओं में बोलने की क्षमता, न केवल उनकी आध्यात्मिक स्थिति का संकेत थी, बल्कि उन्हें एक-दूसरे से सामाजिक रूप से दूर करने के लिए भी उपयोग किया गया होगा।

इसलिए कुछ कोरिंथियन जो उच्च सामाजिक स्थिति और सम्मान के थे, आध्यात्मिक उपहारों में बोलने की क्षमता के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक स्थिति का संकेत देकर इसे और अधिक मजबूत कर रहे थे, जिससे आगे विभाजन हो रहा था। हमने देखा है कि सामाजिक-आर्थिक विभाजन में संरक्षक-ग्राहक संबंध, अमीर और गरीब के बीच विभाजन जैसे मुद्दे, कोरिंथ में कई समस्याओं के पीछे छिपे प्रतीत होते हैं। और संभवतः अध्याय 12 में समस्या के पीछे यही छिपा है।

अन्य भाषाओं में बोलने की उनकी क्षमता, उत्साहपूर्ण वाणी, उन्मादपूर्ण भाषाएं, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने एक निश्चित आध्यात्मिक स्तर पर पहुंचने, उनकी आध्यात्मिक स्थिति, बल्कि समाज के विशिष्ट सदस्यों के रूप में उनकी सामाजिक स्थिति का भी संकेत दिया है। इसलिए, वे स्वयं को और अधिक दूर कर रहे हैं और मण्डली के गरीब सदस्यों से विभाजन का कारण बन रहे हैं। और इसलिए पौलुस को अध्याय 12 में यही संबोधित करना है।

वह इस मुद्दे को संबोधित करना शुरू करता है कि कैसे आध्यात्मिक उपहारों का उपयोग विभाजन के संकेत के रूप में नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसके बजाय वह एक शरीर की कल्पना का उपयोग करता है। कोरिंथियन चर्च को एक ऐसे निकाय के रूप में देखा जाना चाहिए जिसके सभी हिस्सों की समान वैधता हो। इसलिए पॉल मूल रूप से अध्याय 12 में खेल के मैदान को बराबर करने की कोशिश कर रहा है।

कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा कोई उपहार नहीं है जो किसी भी अन्य से अधिक भावना को दर्शाता हो। ऐसा कोई उपहार नहीं है जो अन्य उपहारों से अधिक इस बात का संकेत हो कि किसी में आत्मा है। तो इसीलिए उनके पास उपहारों की यह लंबी सूची है।

और दिलचस्प बात यह है कि वह जीभ को उस सूची के अंत में रखता है। कुरिन्थवासी इसके साथ जो कर रहे हैं उसे फिर से शायद संतुलित या बेअसर करने के लिए। तो कुरिन्थियों की एक उपहार, जीभ को उनकी वास्तविक आध्यात्मिक स्थिति और यहां तक कि सामाजिक स्थिति के संकेत के रूप में ऊंचा उठाने की प्रवृत्ति के जवाब में, पॉल शरीर की कल्पना का उपयोग करके और अन्य चीजें करके खेल के मैदान को समतल करता है।

वह मैदान को समतल करने की कोशिश करता है और कहता है कि नहीं, कोई भी उपहार किसी भी अन्य से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। ऐसा कोई पदानुक्रम नहीं हो सकता जहां एक उपहार किसी अन्य की तुलना में अधिक भावना दर्शाता हो। वे सभी समान रूप से भावना का प्रदर्शन करते हैं।

चर्च एक ऐसी संस्था है जहाँ सभी सदस्य समान भूमिका निभाते हैं। अब दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 14 समाप्त होता है, मुझे खेद है, अध्याय 12 श्लोक 30 में समाप्त होता है। क्या सभी के पास उपचार के उपहार हैं? प्रतिक्रिया, नहीं।

क्या सभी अन्य भाषा में बात करते हैं? नहीं, क्या सभी व्याख्या करते हैं लेकिन उत्सुकता से बड़े उपहारों की इच्छा रखते हैं? अब अध्याय 14, यदि आप 13 को छोड़ दें, तो अध्याय 12 स्वाभाविक रूप से 14 में विलीन हो जाता है। वह आगे कहते हैं, इसलिए प्रेम के मार्ग का अनुसरण करें और आध्यात्मिक उपहारों की उत्सुकता से इच्छा करें।

जिसे उसने अभी अध्याय 12, श्लोक 30 में समाप्त किया है। वह कहता है कि बड़े उपहारों की उत्सुकता से इच्छा करो। अब वह उन्हें 14.1 में फिर से बताता है, बड़े उपहारों की उत्सुकता से इच्छा करो।

और वह जो करता है वह अध्याय 14 में है, बहुत संक्षेप में, अध्याय 14 में पॉल भविष्यवाणी के उपहार को उस उपहार के रूप में उजागर करता है जिसे कोरिंथियन चर्च को उत्सुकता से चाहना चाहिए। और सवाल यह है कि वह ऐसा क्यों करता है? शायद इसलिए क्योंकि भविष्यवाणी एक ऐसा उपहार है जो पूरे चर्च को तुरंत समझ में आ जाता है। जब पूरा चर्च एक साथ इकट्ठा होगा तो भविष्यवाणी से तत्काल लाभ होगा।

और अध्याय 12 से 14 में यह देखना महत्वपूर्ण है कि पॉल मुख्य रूप से कोरिंथियन मण्डली को संबोधित कर रहा है जब वे पूजा के लिए इकट्ठा होते हैं। इसलिए अध्याय 14 में, पॉल उन्हें प्रोत्साहित करता है, जब आप पूजा के लिए इकट्ठा होते हैं, तो आपको भविष्यवाणी के उपहार का पीछा करना चाहिए। फिर, क्यों? क्योंकि यह वहां मौजूद हर किसी के लिए तुरंत समझने योग्य और समझ में आने योग्य है।

जीभ नहीं है। मेरी राय में, पॉल आवश्यक रूप से यहां अन्य भाषाओं को बदनाम नहीं कर रहा है। वह सिर्फ यह कह रहा है कि जब पूजा, अन्य भाषाओं की बात आती है, तो पॉल पसंद करेगा कि वे अन्य भाषाओं में न बोलें क्योंकि यह तुरंत समझ में नहीं आता है।

इसकी व्याख्या करने के लिए किसी के होने के अलावा, इसे बोलने वाले व्यक्ति के लिए यह प्राथमिक लाभ है। और जब तक इसकी व्याख्या न की जाए, इससे सभी पाठकों को तुरंत लाभ नहीं होता है। इसलिए, पॉल चाहता है कि कुरिन्थियों को भविष्यवाणी या भविष्यवाणी में बोलना जारी रखना चाहिए क्योंकि यह वहां मौजूद हर किसी के लिए तुरंत समझने योग्य और समझने योग्य है।

इससे तुरंत लाभ मिलता है। अब अध्याय 13 इन सबमें कैसे फिट बैठता है? मूल रूप से, मुझे लगता है कि अध्याय 13 इस बात की कुंजी है कि कुरिन्थियों को अपने आध्यात्मिक उपहारों का उपयोग कैसे करना चाहिए। अर्थात्, यदि कुरिन्थियों में उस प्रकार का प्रेम है जैसा पौलुस अध्याय 13 में वर्णित और चित्रित करता है, तो उसे अध्याय 14 द्वारा प्रदर्शित किया जाएगा।

अर्थात्, वे ऐसी भाषा या उपहारों का अनुसरण नहीं करेंगे जिससे उनकी सामाजिक और आध्यात्मिक स्थिति को बढ़ावा मिले, या वे ऐसे उपहारों का अनुसरण नहीं करेंगे जो केवल उनके लिए लाभकारी हों। यदि उनके पास 13 में उस प्रकार का प्रेम है जो धैर्यवान है, दयालु है, ईर्ष्या नहीं करता, घमंड नहीं करता, घमंड नहीं करता, असभ्य नहीं है, स्वार्थी नहीं है, आसानी से क्रोधित नहीं होता, प्रसन्न नहीं होता बुराई, आदि, आदि। यदि उनमें उस प्रकार का प्रेम है, तो वे अध्याय 14 में भविष्यवाणी के उपहार का अनुसरण करेंगे क्योंकि यह तुरंत समझ में आता है और इससे पूरी मंडली को लाभ होता है, न कि केवल उस व्यक्ति के लिए जो इस उपहार का उपयोग करता है।

इसलिए अध्याय 13 एक महत्वपूर्ण पाठ है, और फिर, मैं यह नहीं कहना चाहता कि इसका उपयोग अन्य संदर्भों में नहीं किया जा सकता है, लेकिन 1 कुरिन्थियों के भीतर, यह दो अध्यायों, 12 और 14 के ठीक बीच में आता है, वह पता आध्यात्मिक उपहारों के मुद्दे. और अध्याय 13 उन

साधनों और तरीकों को इंगित करता है जिनसे उपहार संचालित होना चाहिए। और यदि वे अध्याय 13 में दिए गए प्रेम के प्रकार का अनुसरण करते हैं, तो वे उन उपहारों का अनुसरण करेंगे जो केवल उनके लिए ही नहीं, बल्कि सभी के लिए लाभकारी हैं।

वे उपहारों का स्वार्थी ढंग से उपयोग करना बंद कर देंगे। पॉल के पत्रों में एक और, कुलुस्सियों अध्याय 3 और छंद 1 से 4। कुलुस्सियों अध्याय 3 और 1 से 4 में, हमें एक खंड मिलता है जिसे संभवतः पॉल को उससे कहीं अधिक रहस्यमय बनाने के संदर्भ में गलत समझा जा सकता है, जितना वह वास्तव में है, क्योंकि 3, 1 से 4 में, वह कहता है, और मैंने इस तरह का एक पाठ पढ़ा, और आपको आश्चर्य होता है, ऊपर की चीज़ों की तलाश करने का क्या मतलब है और पृथ्वी की चीज़ों की नहीं? मैंने अक्सर इस पाठ को लगभग पलायनवादी शब्दों में समझाते हुए सुना है, कि ईसाई वह है जो अपना जीवन स्वर्गीय वास्तविकता में जीता है, और सांसारिक वास्तविकता वास्तव में बिल्कुल भी मायने नहीं रखती है। यह सबसे अच्छे रूप में महत्वहीन है, या सबसे बुरे रूप में, यह बुरा है और इससे बचा जाना चाहिए।

और इस पाठ का उपयोग कभी-कभी भौतिक और सांसारिक किसी भी चीज़ से अलग होने के तर्क के लिए किया जाता है। लेकिन फिर, मुझे लगता है कि कुंजी यह समझना है कि यह संदर्भ में कैसे फिट बैठता है। सबसे पहले, अध्याय 3 नैतिक खंड का परिचय या शुरुआत है, जो कुलुस्सियों को पॉल के पत्र का प्राथमिक नैतिक खंड है।

ऐसा नहीं है कि उसने पहले कुछ नैतिकता या अनिवार्यताओं पर चर्चा नहीं की है, लेकिन अब अध्याय 3, कुलुस्सियों के अंत तक, अत्यधिक उपदेशात्मक है, और आपको पॉल के पत्रों में बहुत सारी अनिवार्यताएं और नैतिक अनुभाग मिलते हैं, जैसे हमने पाया है जब हमने पत्रों के पत्र-पत्रिका प्रारूप पर चर्चा की तो इसे कुछ अन्य पत्रों में भी देखा गया। विशेष रूप से इस पाठ के साथ, इसके पहले और बाद में जो आता है उसके प्रकाश में इसे समझना आवश्यक है, अर्थात् इसे व्यापक तर्क और संदर्भ में रखना है। पहली चीज़ जिस पर आप ध्यान देंगे, वह है कुलुस्सियों का अध्याय 3, 1-4, ठीक उस खंड के ठीक बाद आता है जहाँ पॉल ने इस झूठी शिक्षा के बारे में बहुत ही मार्मिक ढंग से बात की है या उसका जवाब दिया है, जिससे वह निपट रहा है।

इस पाठ्यक्रम में ऐतिहासिक आलोचना के तहत पहले, हमने इस झूठी शिक्षा की संभावित प्रकृति के बारे में थोड़ी बात की थी, और मैं उस पर दोबारा नहीं जाऊंगा, लेकिन सिर्फ यह मानना कि एक झूठी शिक्षा थी, अध्याय के उत्तरार्ध में है 2, पॉल विशेष रूप से इस शिक्षण पर विस्तार से प्रतिक्रिया देता प्रतीत होता है। और वह जो करता है वह इस शिक्षण के नैतिक दिवालियापन को उजागर करता है। वह प्रदर्शित करता है कि इससे उसकी समस्या सिर्फ धार्मिक नहीं है, बल्कि नैतिक भी है।

आखिरकार, पॉल आश्वस्त है कि यह शिक्षा, और जो कुलुस्सियों को प्रदान करती है, वह वास्तव में दिवालिया है। यह अंततः पाप पर विजय नहीं पा सकता। यह अंततः ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन को बढ़ावा नहीं दे सकता या मसीह में जीवन को बढ़ावा नहीं दे सकता।

वास्तव में, ध्यान दें कि इसका अंत कैसे होता है। आखिरी बात जो पौलुस कुलुस्सियों अध्याय 2 में कहता है, सभी 21 तक, वह कहता है, तुम संसार की इन चीजों का अनुसरण क्यों करते हो और उसके शासन के अधीन क्यों होते हो? श्लोक 21, न संभालो, न चखो, न छूओ। ये सभी उपयोग के साथ नष्ट होने के लिए नियत हैं, क्योंकि ये मानवीय आदेशों और शिक्षाओं पर आधारित हैं।

इस तरह के नियम, वास्तव में, स्वयं पर थोपी गई पूजा और झूठी विनम्रता और शरीर के प्रति उनके कठोर व्यवहार के साथ ज्ञान का आभास देते हैं, लेकिन कामुक भोगों पर लगाम लगाने के लिए उनमें कोई मूल्य नहीं है। लेकिन फिर सवाल यह है कि इसे क्या रोक सकता है? क्या सच्ची उपासना को बढ़ावा देता है, और क्या पापपूर्ण भोगों को रोकता है? परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन को क्या बढ़ावा देता है? उसे क्या बढ़ावा देता है? अध्याय 3, 1-4 उत्तर है। अर्थात्, क्योंकि तुम मसीह के साथ पले-बढ़े हो, इसलिए ऊपर की वस्तुओं की खोज करो, न कि पृथ्वी की वस्तुओं की।

इसके बजाय, अपने मन को ऊपर की चीजों पर केंद्रित करें जहां मसीह अब बैठा है, और जहां आप उसके साथ एकजुट होने के कारण बैठे हैं। लेकिन फिर भी यह सवाल उठता है कि ऊपर

की चीज़ों की तलाश करने और पृथ्वी पर मौजूद चीज़ों की तलाश करने का क्या मतलब है? इस दिवालिया शिक्षण के प्रति यह कैसी प्रतिक्रिया है? पृथ्वी पर मौजूद चीज़ों की बजाय ऊपर की चीज़ों की खोज करना पापपूर्ण भोगों को कैसे रोकता है? यह ईश्वरीय जीवन और ईश्वर को प्रसन्न करने वाली जीवनशैली को कैसे बढ़ावा देता है? खैर, यहीं पर अध्याय 3 का शेष भाग आवश्यक है। अध्याय 3 का शेष भाग, और श्लोक 1 में अध्याय 4 तक, मुझे लगता है कि इसका अर्थ आगे बताया गया है।

तो अध्याय 3, 1-4 एक प्रकार का सारांश है जो अब अध्याय के बाकी हिस्सों में, अध्याय 3 के बाकी हिस्सों में, और अध्याय 4 के पहले श्लोक में खुल जाएगा। ध्यान दें कि पॉल बुराइयों की एक श्रृंखला से शुरू होता है। हमने पहले इस तथ्य के बारे में बात की थी कि पॉल अपने समय में अक्सर विशिष्ट या सामान्य रूपों का उपयोग करते थे, और उनमें से एक वाइस सूची थी। उप-सूची केवल उन चीज़ों की एक सूची थी जिनसे बचना चाहिए, और पॉल ने यहां एक को शामिल किया है, श्लोक 5 से शुरू करते हुए। ध्यान दें कि वह इसका वर्णन कैसे करता है।

वह कहता है, इसलिए जो कुछ भी तुम्हारे सांसारिक स्वभाव का है, उसे मार डालो। तो सांसारिक चीज़ों पर अपना मन न लगाने का यही अर्थ है। जब पौलुस कहता है, अपना मन ऊपर की वस्तुओं पर लगाओ, न कि पृथ्वी की वस्तुओं पर।

इसका क्या मतलब है? यह रहा। वह कहता है, जो कुछ भी तुम्हारे सांसारिक स्वभाव का है उसे मार डालो। व्यभिचार, अशुद्धता, वासना, बुरी इच्छाएँ, लोभ, जो मूर्तिपूजा है।

इनके कारण परमेश्वर का क्रोध आ रहा है। फिर बाद में वह कहते हैं, अपने आप को क्रोध, क्रोध, द्वेष, बदनामी और उस पूरी बुरी सूची से मुक्त करो। सांसारिक चीज़ों पर अपना मन न लगाने का यही अर्थ है।

इसका अर्थ है इस प्रकार की बुराइयों का पीछा न करना और उनमें शामिल न होना। लेकिन फिर उपरोक्त बातों पर अपना मन लगाने का क्या मतलब है? खैर, पॉल पद 12 को सद्गुणों की सूची में परिवर्तित करता है। उन चीज़ों की सूची जिन्हें परमेश्वर के लोगों को अपनाना चाहिए।

इसलिए, परमेश्वर के चुने हुए, पवित्र और अत्यंत प्रिय लोगों के रूप में, अपने आप को करुणा, दयालुता, नम्रता, नम्रता और धैर्य के साथ पहनें, एक-दूसरे को सहन करें, एक-दूसरे को क्षमा करें। फिर वह आगे बढ़ता है और आदेशों की एक श्रृंखला देता है। मसीह की शांति आपके दिलों में राज करे और आभारी रहें।

मसीह के वचन को आपमें प्रचुरता से निवास करने दें। आप जो कुछ भी करते हैं, चाहे वचन से या कर्म से, सब कुछ प्रभु यीशु मसीह के नाम पर करें। तो स्वर्गीय चीज़ों पर अपना मन लगाने का यही मतलब है।

इसलिए अपने मन को सांसारिक चीज़ों की बजाय स्वर्गीय चीज़ों पर केंद्रित करने का किसी भी तरह से किसी आध्यात्मिक अस्तित्व से भागने या इस जीवन में चीज़ों को अनदेखा करने या कम महत्व देने या भौतिक या इस दुनिया से संबंधित किसी भी चीज़ को करने से इनकार करने से कोई लेना-देना नहीं है। पॉल अध्याय 3 और 4 के शेष भाग में यह स्पष्ट करता है कि अपने मन को पृथ्वी पर नहीं बल्कि ऊपर की चीज़ों पर केंद्रित करने का अर्थ वर्तमान में इस पृथ्वी पर उचित रूप से जीवन जीना है। यह उन सद्गुणों को आगे बढ़ाने के लिए है जो मसीह में जीवन की विशेषता हैं, जैसा कि वह छंद 10 और 11 में कहते हैं, नए स्वयं की विशेषता है जो निर्माता की छवि में नवीनीकृत हो रहा है।

उपरोक्त चीज़ों पर अपना मन लगाने, उसके साथ लगातार जीने का यही मतलब है। और पृथ्वी पर की चीज़ों से बचना और उन पर अपना मन न लगाना और पृथ्वी पर की चीज़ों से दूर रहने का अर्थ है उन बुराइयों में भाग लेने से इनकार करना जो पापी, इस वर्तमान पापी युग की विशेषता हैं। उन बुराइयों का पीछा करना जो विनाशकारी हैं और ईश्वरीय जीवन को बढ़ावा नहीं देती हैं।

इसलिए कुलुस्सियों 3, 1 से 4 को इसके संदर्भ में रखने में सक्षम होने से हमें इसे समझने में मदद मिलती है, लेकिन साथ ही हमें गलतफहमी से बचने और पाठ के भीतर ऐसी बातें कहने में भी मदद मिलती है जो पॉल स्पष्ट रूप से इरादा नहीं कर रहा था। यह उनके नैतिक उपदेश का हिस्सा है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से एक उदाहरण देने के लिए एक अंतिम अंश।

और मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि यह दिखाना है कि संदर्भ रहस्योद्घाटन में भी काम करता है। हम अक्सर इसे विभिन्न प्रकार के असंबद्ध दृश्यों और इन सभी अजीब छवियों और दृश्यों के संग्रह या श्रृंखला के रूप में सोचते हैं। कभी-कभी हम उन्हें एक साथ रखने में असफल हो जाते हैं और देखते हैं कि कभी-कभी पूरी किताब में एक प्रासंगिक सुसंगतता होती है।

पुस्तक को बहुत सावधानी से एक साथ रखा गया है और आपके पास केवल बिखरे हुए, असंबंधित दृश्यों और प्रतीकों और छवियों का संग्रह नहीं है। इसलिए मैं एक खंड को बहुत संक्षेप में देखना चाहता हूँ जो मुझे लगता है कि काफी स्पष्ट है और वह अध्याय 6 है। अध्याय 6 में हम सात मुहरों की एक श्रृंखला देखते हैं। और यहां तक कि अध्याय 6, अध्याय 6 को इसके संदर्भ में कहें तो, अध्याय 6 इन सात मुहरों से शुरू होता है और पहली चार मुहरें चार घोड़े हैं।

अधिकांश लोग सर्वनाश के चार घुड़सवारों से परिचित हैं और हम उन्हें चित्रों और कलात्मक चित्रणों, यहां तक कि पुस्तक शीर्षकों में भी देखते हैं। लेकिन अध्याय 6 में इन सात मुहरों का यह विवरण, सबसे पहले, जब आप इसे पीछे जाने के लिए इसके संदर्भ में रखते हैं, तो यह अध्याय स्वाभाविक रूप से अध्याय 4 और 5 से आगे बढ़ता है जहां जॉन स्वर्ग में सिंहासन और उस पर बैठे एक व्यक्ति का दर्शन देखता है सिंहासन। लेकिन जो सिंहासन पर बैठा है, उसके पास अध्याय 5 की शुरुआत में एक पुस्तक भी है। और इस पुस्तक में, विस्तार में जाने के बिना, संभवतः भगवान की न केवल न्याय करने की योजना है, बल्कि मोक्ष लाने और दुनिया में अपना राज्य स्थापित करने की भी योजना है।

तो अपने राज्य की स्थापना करके, जिसमें उसके शासन और राज्य की स्थापना के लिए रास्ता बनाने के लिए इस वर्तमान दुनिया का न्याय करना भी शामिल है। अध्याय 5 में, जॉन को निराशा

में रोते हुए पाया जाता है क्योंकि स्कॉल खोलने के लिए कोई भी योग्य नहीं है जब तक कि अंततः उसे कोई दिखाई न दे और वह मेम्ना है। तो फिर, सिंहासन पर बैठे परमेश्वर के अलावा, अचानक मेम्ना, यीशु मसीह, प्रकट होता है और वह उस पुस्तक को खोलने के योग्य है जिस पर सात मुहरें हैं, सीलबंद पुस्तक।

इसलिए, अध्याय 6 से शुरू करते हुए, हम स्कॉल को बिना सील किए हुए देखना शुरू करते हैं। वह स्कॉल जो अध्याय 4 और 5 में उभरता है, अध्याय 6 में क्या होने वाला है उसके लिए मंच तैयार करता है। अब स्कॉल को खोला जा रहा है। और जैसे ही प्रत्येक मुहर हटाई जाती है, भगवान का निर्णय... याद रखें, पुस्तक में न्याय और मोक्ष के लिए भगवान की योजना शामिल है।

अब अध्याय 6 में, मुझे लगता है कि हम प्रारंभिक निर्णय देखना शुरू करते हैं। जैसे ही उस पुस्तक को खोलना शुरू होता है, प्रत्येक मुहर के साथ, एक प्रारंभिक निर्णय जो 4 और 5 से आता है, जो सिंहासन से आता है, इस पृथ्वी पर प्रकट होना शुरू हो जाता है। अब, सबसे आखिरी मुहर, अध्याय 6 की सबसे आखिरी मुहर, जो वास्तव में मुहर संख्या 6 है, सातवीं मुहर बाद में आती है, लेकिन मैं अभी उसके बारे में बात नहीं करना चाहता, कि ऐसा क्यों है।

लेकिन मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि अध्याय 6, श्लोक 12 से 17 में, हमें अध्याय 6 की अंतिम मुहर मिलती है, जो मुहर संख्या 6 है, हम इसे खुला हुआ देखते हैं। और ध्यान दें कि क्या होता है, श्लोक 12 से शुरू करते हुए। मैंने देखा कि उसने छठी मुहर खोली, और एक बड़ा भूकंप आया।

सूरज काला हो गया, बकरी के बालों से बने टाट की तरह। पूरा चंद्रमा रक्त लाल हो गया, और आकाश के तारे पृथ्वी पर गिर पड़े। जैसे तेज़ आँधी के झोंके से अंजीर के पेड़ से अंजीर गिरे, वैसे ही आकाश लुढ़कती हुई पुस्तक की भाँति पीछे हट गया, और हर एक पर्वत और द्वीप अपने स्थान से हट गए।

संभवतः, फिर से, यह अंत समय के न्याय का संकेत है। अब हम दुनिया के अंत पर हैं। यहाँ अंतिम, परम न्याय है, जहाँ ईश्वर विद्रोही मानवता पर अपना क्रोध और अपना निर्णय डालता है।

लेकिन ध्यान दें कि इसमें क्या कहा गया है, 15 से 17 तक आगे बढ़ें। तब पृथ्वी के राजा, राजकुमार, सेनापति, अमीर, शक्तिशाली, और हर गुलाम और हर स्वतंत्र व्यक्ति गुफाओं में और चट्टानों के बीच छिप गए। पहाड़ों। उन्होंने पहाड़ों और चट्टानों को पुकारा, कि हम पर गिर पड़ो, और हमें उसके साम्हने से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमे के क्रोध से छिपा लो।

इसलिए वे परमेश्वर के न्याय और मेमे के क्रोध का सामना करने के बजाय अपने ऊपर चट्टानें और पहाड़ गिरना पसंद करेंगे। और फिर पद 17. क्योंकि उनके क्रोध का महान दिन, वह दिन, इतिहास के अंत में यह अंतिम न्याय है, परमेश्वर और मेमे के क्रोध के फैलने का महान दिन, क्रोध का महान दिन आ गया है, और कौन खड़ा हो सकता है? फिर से, ध्यान दें कि अध्याय 6 उस प्रश्न के साथ कैसे समाप्त होता है।

परमेश्वर का क्रोध आ गया है, इसे कौन सह सकता है? मेरी राय में, अध्याय 7 उस प्रश्न का उत्तर प्रदान करता है। कौन खड़ा हो सकता है? और अध्याय 7 में आपको 144,000 की सीलिंग का यह विवरण मिलेगा। विस्तार में जाने के बिना, मैं तर्क दूंगा कि यह चर्च को भगवान के लोगों के रूप में दर्शाता है, जिन्हें एक सेना के रूप में चित्रित किया गया है जो युद्ध करने के लिए निकलती है और संघर्ष में है, हालांकि वे ऐसा अपने कष्ट सहते हुए करते हैं, हथियार उठाकर नहीं।

लेकिन अध्याय 7 का उद्देश्य उन लोगों को प्रदर्शित करना है जिन पर परमेश्वर की मुहर लगी हुई है, वे ही हैं जो परमेश्वर के क्रोध के दिन का सामना करने में सक्षम होंगे। ये वे लोग हैं जो परमेश्वर का क्रोध नहीं सहेंगे। इसलिए अध्याय 6 केवल एक विवेकपूर्ण दर्शन नहीं है जो किसी भी अन्य चीज़ से असंबंधित है, बल्कि फिर से, अध्याय 6 अध्याय 4 और 5 से विकसित होता है, सिंहासन का दर्शन और सात-मुहरबंद स्क्रॉल।

हम अध्याय 6 में स्कॉल खोले हुए और प्रारंभिक निर्णय होते हुए देखते हैं। अध्याय 4 और 5 का वह स्कॉल अब सामने आना शुरू हो गया है। परमेश्वर की योजना अब साकार होने लगी है क्योंकि यीशु मसीह ने इसे क्रियान्वित किया है।

और फिर अध्याय 6 इस प्रश्न के साथ समाप्त होता है, कौन खड़ा हो सकता है? जब परमेश्वर अपना न्याय प्रकट करता है, विशेषकर परमेश्वर के क्रोध के दिन, तो कौन उसका सामना करने में सक्षम है? अध्याय 7 फिर उस प्रश्न का उत्तर देने के लिए रुकता है। कि जिन पर परमेश्वर की मुहर लगी है, वे ही परमेश्वर के क्रोध के दिन में खड़े रह सकेंगे। तो ये केवल उदाहरणों की एक संख्या या श्रृंखला है कि कैसे नए या पुराने नियम के पाठ के साहित्यिक संदर्भ को समझने से इसकी व्याख्या करने के तरीके में अंतर आ सकता है।

और फिर, संक्षेप में कहें तो, नंबर एक, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप अपने अंश को साहित्यिक प्रवाह के भीतर, संदर्भ के भीतर यह पूछकर रखें कि क्या आप एक कविता या पूरे पैराग्राफ या पाठ के साथ काम कर रहे हैं, यह पूछ रहा है कि यह कैसे योगदान देता है विचार के प्रवाह को? इसका इससे पहले आने वाली चीज़ से क्या संबंध है? इसके बाद जो आता है उसमें यह कैसे प्रवाहित होता है ? इसकी क्या भूमिका या कार्य है? यदि यह न होता तो क्या कमी होती? यह समझाने में सक्षम हो कि यह वहां क्या कर रहा है। जब तक आपने ऐसा नहीं किया, तब तक आप पाठ को समझ नहीं पाए। आप व्याख्या की प्रक्रिया में आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं हैं।

वास्तव में, मैं कहूंगा कि यह शब्द अध्ययन और कुछ अन्य विस्तृत कार्य करने से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यह जितना महत्वपूर्ण है, अंततः, मुझे लगता है कि आप पाठ को उसके व्यापक संदर्भ में रखने और यह पूछने में सक्षम होने से बहुत अधिक लाभ प्राप्त करेंगे कि यह वहां क्या कर रहा है। लेकिन दूसरा, जैसा कि हमने कहा, संदर्भ शब्द के बारे में सिर्फ इतना मत कहिए कि संदर्भ इसकी मांग करता है, संदर्भ इसकी मांग करता है, या संदर्भ सुझाव देता है, या मैं संदर्भ के कारण यह विचार रखता हूँ।

आपको संदर्भ में जो इंगित करता है उसे अलग करने में सक्षम होने की आवश्यकता है कि मुझे पाठ को इसी तरह पढ़ना चाहिए। इसलिए आप जिस पुराने और नए नियम के पाठ से निपट रहे हैं, उसके व्यापक संदर्भ पर सावधानीपूर्वक ध्यान दें। फिर, चाहे वह एक कविता हो, पद्य स्तर पर, या वाक्य स्तर, या पैराग्राफ, या व्यापक खंड, यह समझने में सक्षम हो कि यह वहां क्या कर रहा है।

ठीक है, मैं अगले कुछ सत्रों में आगे बढ़ना चाहता हूं और बाइबिल की व्याख्या की एक और महत्वपूर्ण विशेषता पर चर्चा करना चाहता हूं, और वह यह है कि नए नियम के लेखक पुराने नियम का उपयोग कैसे करते हैं। इस प्रकार पुराने नियम के पाठों को नए नियम के लेखकों द्वारा उठाया जाता है, और हम इसे कैसे समझते हैं, हम कैसे विश्लेषण और अन्वेषण करते हैं कि नए नियम के लेखक पुराने नियम के ग्रंथों का उपयोग करते समय क्या कर रहे हैं। हममें से अधिकांश लोग इसके बारे में जानते हैं क्योंकि आपको न्यू टेस्टामेंट में बहुत दूर तक पढ़ने की ज़रूरत नहीं है।

आप पुराने नियम के उद्धरणों की श्रृंखला खोजे बिना मैथ्यू के पहले दो अध्यायों को भी पार नहीं कर सकते। और जब आप पुराने नियम के बाकी हिस्सों को बार-बार पढ़ते हैं, तो कुछ किताबें ऐसी हैं जो उतनी प्रमुख नहीं हैं, लेकिन बार-बार आपका सामना पुराने नियम के उद्धरणों से होता है। और इसलिए स्पष्ट रूप से नए नियम के लेखक इस बात में रुचि रखते हैं कि पुराना नियम उनके अपने लेखन और नए रहस्योद्घाटन से कैसे संबंधित है जो अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से आया है।

इसलिए हम थोड़ा समय लेना चाहते हैं और यह पता लगाना चाहते हैं कि हम नए नियम के लेखकों द्वारा पुराने नियम के उपयोग को कैसे संभालते हैं। पहचानने वाली पहली बात यह है कि पुराने और नए नियम अपने व्यापक विहित संदर्भ में एक साथ खड़े हैं। वह यह है कि पुराने और नये नियम एक-दूसरे के साथ वादे और पूर्ति के रूप में जुड़े हुए हैं।

न्यू टेस्टामेंट, हम बार-बार न्यू टेस्टामेंट और उसके लेखकों को उनकी शब्दावली, उनकी अवधारणाओं, उनकी संरचनाओं के लिए पुराने टेस्टामेंट का सहारा लेते हुए देखते हैं, कि वे यीशु मसीह के व्यक्तित्व में भगवान के नए अद्वितीय रहस्योद्घाटन को कैसे समझते हैं। नए नियम के लेखकों ने इस नए रहस्योद्घाटन को पुराने नियम और पुराने नियम के माध्यम से भगवान के रहस्योद्घाटन की निरंतरता में समझा। तो हमारी ईसाई बाइबिल के भीतर पुराना और नया नियम एक विहित रिश्ते में खड़ा है, वादे को पूरा करने का रिश्ता।

तो इसका मतलब यह है कि हमें इस बात से अवगत होने की आवश्यकता है कि नया नियम पुराने नियम के पाठ पर कैसे आधारित है और इसे पुराने नियम में जो वादा किया गया था उसकी पूर्ति और चरमोत्कर्ष के रूप में कैसे देखा जाता है। और कैसे यीशु मसीह के व्यक्तित्व में नई वाचा के रहस्योद्घाटन को भगवान की पुरानी वाचा की पूर्ति के रूप में देखा जाता है, पुरानी वाचा के धर्मग्रंथों के तहत भगवान की वाचा का रहस्योद्घाटन। और जो हम पाते हैं वह स्वयं यीशु और सुसमाचार दोनों हैं, लेकिन नए नियम के लेखक बड़े पैमाने पर पुराने नियम पर आधारित हैं।

लेकिन फिर, हम देखेंगे कि वे विभिन्न तरीकों से ऐसा करते हैं। और इसे समझने के लिए, मैं बार-बार सोचता हूं, नए नियम के पाठ और नए नियम के पाठ के अर्थ को समझने के लिए, अंतर्निहित पुराने नियम के पाठ को समझना आवश्यक है जो अब नए नियम में एक प्रकार के उपपाठ के रूप में दिखाई देता है। इसलिए इसे कहने का दूसरा तरीका यह है कि नए नियम को पुराने नियम के साथ निरंतर अंतरपाठीय संबंध में पढ़ने की आवश्यकता है।

और हम यह देखने जा रहे हैं कि पुराने नियम का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है। नए नियम के लेखक उपयोग नहीं करते हैं, नए नियम के लेखक पुराने नियम के पाठ का उपयोग कैसे करते हैं, इसका कोई एक तरीका या तरीका नहीं है। और हम उन विभिन्न तरीकों के बारे में थोड़ी बात करेंगे जिनसे पुराने नियम का नए नियम में उपयोग किया जाता है।

इसलिए मैं जो करना चाहता हूं, मैं पुराने नियम को नए में बदलने की हमारी चर्चा को दो अलग-अलग खंडों में विभाजित करना चाहता हूं। नंबर एक, हम नए नियम में पुराने नियम के उपयोग से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने में थोड़ा समय व्यतीत करेंगे। और वे मुख्य प्रश्न क्या हैं जो हमें पूछने चाहिए और जो मुख्य प्रश्न उठाए गए हैं।

हमें नए नियम में पुराने नियम के उपयोग का अध्ययन कैसे करना चाहिए? नए नियम के लेखकों द्वारा पुराने नियम का किस प्रकार से उपयोग किया जा सकता है? और यह हमारे नए नियम के पाठ की व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है? और फिर दूसरे सत्र में, हम वास्तव में कुछ विशिष्ट उदाहरणों के माध्यम से यह बताने के लिए काम करेंगे कि ये सिद्धांत कैसे काम करते हैं। और नए टेस्टामेंट में पुराने टेस्टामेंट के उपयोग के लिए एक विधि का वर्णन करना। तो सबसे पहले, हमें पुराने नियम का नए में अध्ययन कैसे करना चाहिए? पुराने नियम के नए में अध्ययन से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न क्या हैं? यह दिलचस्प है कि यद्यपि यह कुछ समय के लिए महत्वपूर्ण रहा है, यह वास्तव में पिछले 20 और 30 वर्षों में हुआ है जहां पुराने नियम और नए नियम के अध्ययन ने वास्तव में प्रगति की है और जोर पकड़ लिया है।

और कई कार्य पुस्तक के रूप में उपलब्ध हैं, आदि। सभी प्रकार की पुस्तकें हैं जो सामान्य रूप से पुराने टेस्टामेंट और नए का इलाज करती हैं या नए टेस्टामेंट की विशिष्ट पुस्तकों का इलाज करती हैं और उन्होंने पुराने टेस्टामेंट का उपयोग कैसे किया है। ऐसी पुस्तकें जो कार्यप्रणाली आदि पर चर्चा करती हैं।

और मैं हमारी चर्चा में उनमें से कुछ का जिक्र करना चाहता हूं। लेकिन इसमें शामिल कुछ मुद्दे क्या हैं? हमें नए नियम में पुराने नियम के उपयोग का अध्ययन कैसे करना चाहिए? सबसे पहले, कुछ प्रारंभिक टिप्पणियों से शुरुआत करें। जैसे ही नए टेस्टामेंट में पुराने टेस्टामेंट का अध्ययन शुरू हुआ, प्रश्नों की एक श्रृंखला को आमतौर पर महत्वपूर्ण माना जाने लगा।

और कुछ मायनों में वे अभी भी हैं। आप अभी भी नए टेस्टामेंट में पुराने टेस्टामेंट के उपचारों को ये प्रश्न पूछते हुए देखते हैं। लेकिन शुरुआत में, कुछ बुनियादी प्रश्न जिन्हें नए नियम में किसी भी

स्थान से पूछना महत्वपूर्ण माना जाता था, जो पुराने नियम के पाठ का उपयोग कर रहा था, इस तरह के प्रश्नों की एक श्रृंखला पूछना था।

न्यू टेस्टामेंट लेखक किस पाठ रूप का उपयोग करता प्रतीत होता है? क्या लेखक मुख्य रूप से पुराने नियम के हिब्रू पाठ पर आधारित था? या लेखक सेप्टुआजेंट पर चित्र बना रहा था? पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद होने के कारण सेप्टुआजेंट ग्रीक के रूप में आम भाषा बन गई। स्पष्टतः पुराने नियम का उस समय की आम भाषा में अनुवाद करना आवश्यक हो गया। तो सेप्टुआजेंट, पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद, कई प्रारंभिक ईसाइयों की बाइबिल प्रतीत होता है।

और अक्सर पॉल के पत्रों में, आप उसे एक पुराने नियम के पाठ को उद्धृत करते हुए देखेंगे जो सेप्टुआजेंट के बहुत करीब या प्रतिबिंबित करता है। पुराने नियम का LXX या ग्रीक अनुवाद। नए में पुराने नियम के अध्ययन में, छात्र अक्सर इस बात में बहुत रुचि रखते थे कि पॉल या मैथ्यू या पीटर या जॉन या जो कोई भी पाठ का प्रारूप तैयार कर रहा है, वह किस रूप में है।

क्या वे स्पष्ट रूप से उस हिब्रू पाठ से उद्धरण दे रहे थे जो हमारे मैसोरेटिक पाठ से मिलता जुलता होगा? या क्या वह किसी पाठ का चित्रण कर रहा था, क्या वह किसी ऐसे पाठ को उद्धृत कर रहा था जो ग्रीक अनुवाद सेप्टुआजेंट से मिलता जुलता था? और फिर इससे क्या फर्क पड़ा? क्या पॉल ने एक या दूसरे को उद्धृत किया, इसमें कोई अंतर था? यदि उन्होंने सेप्टुआजेंट या हिब्रू पाठ उद्धृत किया तो क्या इससे कोई फर्क पड़ा? तो यह उन प्रश्नों में से एक था जिसमें विद्वानों की रुचि थी। अर्थात्, वह पाठ्य रूप क्या था जिसे न्यू टेस्टामेंट लेखक तैयार कर रहा था? दूसरा, क्या लेखक पुराने नियम के संदर्भ की जागरूकता के साथ पुराने नियम का उपयोग करता है? दूसरे शब्दों में, जब एक लेखक, एक नए नियम का लेखक एक पुराने नियम के पाठ को उद्धृत करता है, तो क्या वह केवल उस श्लोक, उस पाठ पर ध्यान केंद्रित कर रहा है? या फिर ऐसा लगता है कि उसे पूरे संदर्भ की जानकारी है? उदाहरण के लिए, यदि पॉल यशायाह की पुस्तक यशायाह से कुछ उद्धृत करता है, तो क्या वह अध्याय 42 और शायद श्लोक 2 से अवगत है? क्या वह अध्याय 42 के पूरे संदर्भ से अवगत है? या इससे भी अधिक व्यापक रूप से, मुझे नहीं

लगाता कि स्पष्ट रूप से पॉल के पास अपनी बाइबिल में अध्याय और छंद नहीं थे। इसलिए मैं हमारे लाभ के लिए अध्यायों और छंदों का उपयोग कर रहा हूँ।

लेकिन क्या पॉल को उससे जुड़े पूरे संदर्भ की जानकारी थी? या क्या नए नियम के लेखक केवल व्यक्तिगत पाठ पर कब्जा कर रहे हैं? और बस अपनी बात को साबित करने के लिए यहां-वहां पाठ के अंशों को पढ़ना और निकालना? एक उदाहरण मैथ्यू 1.23 में हो सकता है। मैथ्यू यशायाह 7.14 से उद्धृत करता है, कुंवारी बच्चे वाली होगी। क्या यह सिर्फ लेखक द्वारा पुराने नियम से एक पाठ को उस व्यापक संदर्भ की जानकारी के बिना छीनना है जिसमें यह घटित होता है? या क्या वह यशायाह 7 के संदर्भ से अवगत है? और उससे भी अधिक व्यापक रूप से. तो यह एक प्रश्न है जो विद्वानों ने पूछा है।

क्या नए नियम के लेखक पुराने नियम के अनुभागों को उद्धृत करते समय पुराने नियम का उपयोग करते हैं? चाहे सिर्फ एक श्लोक हो या कुछ श्लोक. क्या वे उस व्यापक संदर्भ से अवगत हैं जिसमें यह घटित होता है? या क्या वे पुराने नियम को भाषा के शस्त्रागार की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं? या क्या वे केवल ऐसे अंश और अनुभाग ढूंढ रहे हैं जो वे जो कहना चाहते हैं उसका समर्थन करते प्रतीत होते हैं? तीसरा, उसके संबंध में. यदि संख्या दो सत्य है.

यदि वे व्यापक संदर्भ की जागरूकता के साथ पाठ का उपयोग करते हैं। तीसरा मुद्दा जिसमें विद्वानों की रुचि रही है वह यह है कि क्या नए नियम के लेखक उस संदर्भ का सम्मान करते हैं? क्या वे उस सन्दर्भ के मूल अर्थ के साथ लगातार परिच्छेद का उपयोग करते हैं? या फिर, क्या वे केवल संदर्भ का उल्लंघन कर रहे हैं, यहां तक कि संदर्भ के बारे में जानते हुए भी, कविता का उपयोग इस तरह से कर रहे हैं जो उल्लंघन करता है या उसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ में कविता के अर्थ से बहुत अलग करता है। तो क्या नए नियम के लेखक पुराने नियम के उस अंश के मूल अर्थ के संदर्भ का सम्मान करते हैं जिसे वे उद्धृत या इंगित कर रहे हैं? हम वहीं रुकेंगे.

और हमारे अगले सत्र में, हम फिर से यह प्रश्न उठाएंगे कि नए नियम के लेखकों द्वारा पुराने नियम के उपयोग से हमें क्या लेना-देना है? कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे और प्रश्न क्या हैं जो उठाए गए हैं

जिनके बारे में हमें सोचने की ज़रूरत है जब हम पुराने नियम के नए नियम के उपयोग पर विचार करते हैं? और फिर हम कुछ उदाहरणों पर विचार करेंगे कि यह कैसे काम करता है।